भारत–पाकिस्तान के बीच 1965 में हुए युद्ध की स्वर्ण जयंती के उपलक्ष्य में 25 अक्तूबर, 2015 को नागपुर में आयोजित होने वाले समारोह के दौरान माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. भारत–पाक युद्ध 1965 के स्वर्ण जयन्ती वर्ष में यहां के प्रतिष्ठित "लोकशाही वार्ता" अखबार द्वारा आयोजित इस कार्यक्रम में आप सबके बीच आकर मैं गौरवान्वित हूं। लोकशाही वार्ता के मुख्य सम्पादक श्री लक्ष्मण जोशी एवं इस कार्यक्रम की परिकल्पना से लेकर आज इसके आयोजन तक इससे जुड़े सभी लोगों की मैं आभारी हूं। यह हम सबके लिए सौभाग्य का विषय है कि आज हमारे बीच इस युद्ध में सक्रिय रहे कर्नल (सेवानिवृत्त) अभय बालकिशन पटवर्धन भी मौजूद हैं। उनका आप सबकी तरफ से हार्दिक अभिनन्दन करती हूं।

2. हम सब जानते हैं कि भारत एक शांतिप्रिय राष्ट्र है। वह "वसुधैव कुटुम्बकम्" एवं "सर्वेभवन्तु सुखिनः" के मूल्यों पर चलने वाला देश है। भारत ने कभी आक्रमण नहीं किया, भारत पर हमेशा युद्ध थोपा गया। सन् 1962 के युद्ध के उपरान्त भारतीय सेनाओं का मनोबल थोड़ा गिर चुका था, हालात कुछ ऐसे थे। सेनाध्यक्ष पी.एन. थापड़ को अस्वस्थ होने के कारण अफगानिस्तान का राजदूत बनाकर काबूल भेज दिया गया था। देश में अकाल की स्थिति थी। 1964 में नेहरू जी का निधन हो गया और शास्त्री जी प्रधानमंत्री बने और 1964 में ही चीन ने नाभिकीय परीक्षण किया। इसके विपरीत पाकिस्तान में स्थिति बिल्कुल उलट थी। ऐसे सशक्त जनरल अयुब खान जिन्होंने द्वितीय विश्वयुद्ध में बर्मा के जंगलों में युद्ध कौशल हासिल किया था, वे पाकिस्तान का नेतृत्व कर रहे थे। पड़ोसी देश हौसले बुलन्द थे, इसी जोश में उन्होंने भारत पर ताबड़तोड़ आक्रमण किया। पर हमारी सेना ने निज राष्ट्र की सुरक्षा एवं गौरव पर कभी आंच नहीं आने दी। हम पर जब भी आक्रमण हुआ, हमारी सेनाओं ने उन्हें मुंहतोड़ जवाब दिया।

3. मेरे विचार से जब युद्ध होता है तो उसमें सेनाओं की भूमिका काफी महत्वपूर्ण होती है। 1965 का युद्ध में कई ऐसी घटनाएं हुईं जो हमारे सैन्य कौशल, उनकी दक्षता और उत्कृष्टता का जीता जागता उदाहरण है। हाजीपीर, असल उत्तर, फिलौरा, बरकी और डोगराई की पांच प्रमुख

घटनाओं के साथ युद्ध भूमि में असंख्य छोटी–बड़ी घटनाएं हुईं। सब घटनाओं की चर्चा तो संभव नहीं है परंतु कुछ ऐसी घटनाएं हैं जिनकी चर्चा किए बिना यह कार्यक्रम पूर्ण नहीं कहलाएगा। मैं पूरे सम्मान के साथ भारतीय सेना के चौथे ग्रेनेडियर्स के एक बहादुर सैनिक परमवीर चक्र विजेता अब्दुल हमीद की चर्चा करना चाहूंगी जो कि मात्र 32 वर्ष के थे। उन्होंने 10 सितम्बर 1965 को खेमकरण सेक्टर में दुश्मन के पैटन टैंक को आगे बढ़ते देख स्थिति को भांपते हुए, एक जीप पर मुहिम शुरू की और जान की परवाह किए वगैर अपनी जीप पर लगी तोप से लड़ाई लड़ते हुए तीन टैंकों को ध्वस्त कर दिया। उनके बहादुरीपूर्ण कर्त्तव्य से प्रेरित होकर सेना ने उस सेक्टर से दुश्मन को पीछे खदेड़ दिया। उनके इस अतुलनीय साहस के सम्मान में आज भी वहां ''पैटन नगर'' नामक युद्ध स्मारक है।

4. इसी प्रकार, भारत पाक युद्ध के एक और परमवीर चक्र विजेता कर्नल आर्देशीर बरजोरजी तारापोर को भावभीनी श्रद्धांजलि देते हुए उनको याद करना चाहूंगी। 11 सितम्बर 1965 को 17 हॉर्स रेजीमेंट ने उनके नेतृत्व में सियालकोट सेक्टर में फिलोरा पर दक्षिण की ओर से आक्रमण किया। फिलोरा और छविन्दा के बीच पाकिस्तानी सेना की भारी मौजुदगी के बावजूद उन्होंने प्रहार करना नहीं छोड़ा। घायल होने पर भी वे सैन्य टुकड़ी का नेतृत्व करते रहे और 14 सितम्बर को वजीरावाली और 16 सितम्बर को जसूरॉ और बटूर डोगरांडी पर कब्जा किया। उन्होंने वीरता की पराकाष्ठा दिखाई और अपने जान की परवाह नहीं की और अंतिम समय तक अपनी सेना का नेतृत्व करते रहे एवं युद्ध क्षेत्र में ही वीरगति को प्राप्त हुए। मुझे यह बताते हुए बहुत गर्व का अनुभव हो रहा है कि दुश्मन की सेना ने भी वीर तारापोर की बहादुरी का सम्मान करते हुए उनके अंतिम संस्कार के वक्त फायरिंग रोक दी थी।

5. ऐसी वीरता की अगणित घटनाएं युद्ध के मैदान में हुईं। हमारे जांबाज सिपाहियों ने दुश्मन के इतने टैंक तोड़े कि रणभूमि में ही टैंकों की कब्रगाह बन गई। हमारी थल सेना कूच करते–करते लाहौर से सिर्फ 13 किलोमीटर पीछे रह गई थी। मैंने यह ''लाहौर–13 किलोमीटर'' लिखा मील का पत्थर राजपथ पर आयोजित प्रदर्शनी ''शौर्यांजलि'' में देखा। इस युद्ध में भारत ने 1920 किलोमीटर की पाकिस्तान की जमीन पर नियंत्रण किया था जबकि पाकिस्तान 540 किलोमीटर पर ही नियंत्रण

कर पाया था। देश ने 2862 वीर सैनिकों को इस युद्ध में खोया और इनमें से 211 सैनिकों को वीरता पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

6. भारतीय वायु सेना ने भी भारतीय थल सेना का मजबूती से साथ दिया और हमारे वायु वीरों ने अपनी युद्ध क्षमता प्रमाणित कर दी। हमारे वायु सेना के जांबाजों ने अपने छोटे–छोटे नेट विमानों से शत्रु देश के द्वारा विदेशों से आयातित सैवर जेट विमानों को ध्वस्त कर उत्कृष्ट युद्ध कौशल का परिचय दिया और भारत की जीत में सहायक हुए।

7. हमारे अर्धसैनिक बलों की भूमिका भी इस युद्ध में महत्वपूर्ण रही। उन्होंने युद्ध क्षेत्र में सहायक भूमिका में उत्कृष्ट काम किया। युद्ध क्षेत्र में बचाव कार्य, घायलों का प्राथमिक उपचार, उन्हें तुरंत उपयुक्त अस्पताल में पहुंचाना, यातायात के लिए सड़क साफ करना और मलबे को हटाना, इंजीनियरिंग के काम में मदद, जल–आपूर्ति, बिजली आपूर्ति इत्यादि कई कामों में अर्धसैनिक बलों के साथ–साथ हमारे एन.सी.सी. के कैडेटों एवं भारत स्काउट गाडड के स्वयंसेवकों ने बखूबी निभाया। इन कैडेटों और एनएसएस के स्वयंसेवकों ने देश सेवा के उच्च प्रतिमान स्थापित किए। आकाशवाणी, दूरभाष केन्द्रों एवं डाकखाना की सुरक्षा भी इनके जिम्मे रही।

8. वस्तुतः, 1965 का युद्ध सिर्फ सीमा पर नहीं जीता गया, वह वास्तव में हर भारतवासी की जीत थी। वह कुशल नेतृत्व की जीत थी, वह नेतृत्व पर विश्वास की जीत थी। शायद आक्रमणकारी ने सन् 1962 के भारत–चीन युद्ध को देखते हुए हमे कमज़ोर समझकर हम पर यह सुनियोजित और पूरी तैयारी के साथ यह हमला किया था, पर शायद उसे यह आभास नहीं था कि हालांकि भारत कभी युद्ध का पक्षधर नहीं रहा है पर समय गवाह है कि भारत ने हरेक आक्रमणकारी को अपने वीरता और पराक्रम से हराया है और भारत की स्वतंत्रता और सम्प्रभुता को हमेशा अक्षुण्ण रखा है हमारे वीर सैनिकों ने। इन वीर सपूतों की वीरगाथा को शब्दों में बांधना कठिन है।

9. अभी हाल ही में दिल्ली में भारत–पाक युद्ध के 50 वर्ष पूरे होने पर रक्षा मंत्रालय द्वारा एक प्रदर्शनी ''शौर्यांजलि'' लगाई गई थी। मैं माननीय प्रधानमंत्री के कार्यक्रम ''मन की बात'' में इसके विषय में सुनकर उक्त प्रदर्शनी देखने गई। देखने गई थी तो आधे घंटे के लिए, परंतु जब प्रदर्शनी

देखने लगी, तो कब ढाई घंटे बीत गए, पता ही नहीं चला। वहां 1965 के युद्ध को मानो, राजपथ पर सैनिकों ने जीवन्त कर दिया था। इस प्रदर्शनी से मुझे इस युद्ध की कई बारीकियां समझ में आई। मैं अपने वीर सैनिकों के कारनामे एवं हौसलों का प्रदर्शन देखकर गौरवान्वित हो उठी और मेरे मन में यह ख्याल आया कि इन वीर सैनिकों की याद में देश की राजधानी में एक युद्ध स्मारक की स्थापना होनी चाहिए जिसे भारतवासी ही नहीं, कहीं से भी दिल्ली आने वाला हर व्यक्ति का वह गंतव्य बने। ऐसे स्थान निश्चय ही हर आगंतुक में देश के प्रति समर्पण और सेवा का भाव जागृत करते हैं और यही उन वीर शहीदों के प्रति असली श्रद्धांजलि है। इस संबंध में मैंने प्रधानमंत्री जी को पत्र भी लिखा था। आपको जानकर खुशी होगी कि भारत सरकार ने दिल्ली में एक राष्ट्रीय युद्ध स्मारक के निर्माण को मंजूरी दे दी है।

10. देश पर जब कोई विपत्ति आती है, कोई आक्रमण होता है और युद्ध की स्थिति बनती है, तो सिर्फ सेनाएं सीमा पर ही युद्ध नहीं कर रही होती हैं बल्कि हरेक नागरिक एक योद्धा होता है और उस देश के शीर्ष नेतृत्व की उस युद्ध में महत्वपूर्ण भूमिका रहती है। 1965 के युद्ध में माननीय लाल बहादुर शास्त्री के नेतृत्व में उनके ''जय जवान जय किसान'' के उद्घोष से जहां जवानों में उत्साह और जोश का संचार हुआ, वहीं आम जनता, किसानों, युवाओं, महिलाओं यहां तक कि बच्चों ने भी युद्ध की गंभीरता को समझा और अपना–अपना योगदान दिया। महिलाओं ने अपने गहने तक दान किए, लोगों ने व्रत और उपवास किए तथा युद्ध के आर्थिक प्रबंधन में अपनी भागीदारी निभाई। बूंद–बूंद से सागर भरता है। सबके सम्मिलित प्रयासों से भारत माता के कोष में युद्ध के लिए धन की कमी नहीं आई। यहां पर मैं उन मां, बहनों, बच्चों और महिलाओं के साहस को भी नमन करूंगी जिनके बेटे, भाई, पिता और पति सीमाओं पर गोली खाते हैं। ऐसे परिवारों की धूरी अवश्य ही बदल जाती है परंतु ऐसे देशभक्त परिवार व नागरिक युद्ध के परिणाम बदल देते हैं।

11. युद्ध ने कुछ हद तक भारतीय सशस्त्र बलों को और अधिक संगठित सैन्य शक्ति बना दिया। इस युद्ध ने हमारे रक्षा बलों को छह वर्ष बाद 1971 के युद्ध की चुनौती का सामना करने के लिए तैयार किया। इससे हमें युद्धों के परिणाम सुनिश्चित करने में प्रौद्योगिकी और आधुनिक अस्त्र–शस्त्रों का महत्व पहचानने और उन्हें हमारी रक्षा नीति में शामिल करने में भी सहायता मिली। विशेष रूप से यह एक संयुक्त अभियान था जिसमें सेना, नौसेना और वायुसेना ने एक संगठित रणनीति बनाकर

युद्ध में भाग लिया जो हमारी युद्ध से संबंधित योजनाओं का एक महत्वपूर्ण घटक बना। 1965 का युद्ध हुए काफी समय हो चुका है। हमने यह भी सीख लिया है कि आधुनिक युद्ध में कोई भी एक सेना अपने बल पर युद्ध नहीं जीत सकती। खुफिया क्षेत्र में भी आज काफी प्रगति हो चुकी है। कारगिल युद्ध से प्रभावी रूप से यह सिद्ध हुआ कि भारतीय नेतृत्व और सशस्त्र बल किसी भी स्थिति का सामना करने के लिए पूरी तरह तैयार हैं।

12. 1965 के युद्ध के आज पचास वर्ष हो गए हैं। इस युद्ध के बाद उसी देश के साथ हमारे दो और युद्ध हुए। अभी भी भारत के भरसक प्रयासों के बाद भी इस पड़ोसी मुल्क से हमारे संबंधों में मधुरता नहीं आई है। भारतीय नेतृत्व ने हमेशा इसके लिए ईमानदार प्रयास किए हैं। कारगिल युद्ध के तुरंत बाद सौहार्दपूर्ण संबंध बनाने की दिशा में माननीय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कथनी एवं करनी दोनों से पहल की। जब पाकिस्तान के राष्ट्रपति परवेज मुशर्रफ जी को शांति वार्ता के लिए न्यौता देने की बात आई, तो कई साथियों के न चाहने पर भी उन्होंने उदारता से कहा कि परस्पर बातचीत से ही शांति के प्रयासों को सफलता मिलेगी और इसलिए उन्होंने बिना पूर्वाग्रह के परवेज़ मुशर्रफ को शांति वार्ता के लिए आमंत्रित किया। हमारे द्वारा निरंतर किए गए प्रयासों के बावजूद आज स्थिति वही है। पर, हम प्रतिबद्ध हैं कि इस समस्या का समाधान पारस्परिक वार्ता से शांतिपूर्वक तरीके से ही करेंगे।

13. कर्नल पटवर्धन जी ने एक सच्चे वीर सैनिक के नाते सेना में अपने जीवन के 36 वर्ष बिताए। उन्होंने भारत–पाक युद्ध में हिस्सा लिया और आप सबसे उस समय की युद्ध की स्मृतियों को "लोकशाही वार्ता" में 6 सितम्बर से 27 सितम्बर तक लेख के रूप में साझा किया। वही लेख अब एक पुस्तक के रूप में आपके समक्ष प्रस्तुत है। "द्वितीय भारत–पाकिस्तान युद्ध 1965" वस्तुतः, 1965 के युद्ध में शहीद हुए उन बहादुर सैनिकों के प्रति एक सच्ची श्रद्धांजलि है जिन्होंने सभी कठिनाईयों का सामना करते हुए युद्ध के दौरान शत्रुओं का सफलतापूर्वक मुकाबला करने में मुख्य भूमिका निभाई।

14. यह युद्ध कैसे शुरू हुआ, किस प्रकार लड़ा गया, इसका क्या परिणाम रहा, वर्तमान और भावी परिवेश में युद्ध से हम क्या सबक सीख सकते हैं, इन सभी तथ्यों और घटनाओं का कर्नल

पटवर्धन ने अपनी पुस्तक में बारीकी से ब्यौरा प्रस्तुत किया है तथा युद्ध से जुड़ी घटनाओं को पाठकों के समक्ष रखा है। मुझे इस पुस्तक का विमोचन करते हुए गर्व का अनुभव हो रहा है। उनके इस प्रयास को मैं अटल जी की इन पंक्तियों में कहना चाहूंगीः–

"हम पड़ाव को समझे मंजिल, लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल
वर्तमान के मोहजाल में, आने वाला कल न भुलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं ।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा, अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि हड्डियां गलाएं
आओ फिर से दिया जलाएं।"

15. अन्त में मैं पुनः आप सभी का धन्यवाद करती हूं एवं आशा करती हूं कि हमारी युवा पीढ़ी और बच्चे अपने–अपने मार्ग पर ईमानदारी और परिश्रम से चलते हुए भारतवर्ष के गौरवशाली भविष्य को और उत्तम बनाने के लिए काम करेंगे। हम प्रण करें कि देश की स्वतंत्रता के लिए दिए गए बलिदानों एवं स्वतंत्रता पश्चात् भारत की रक्षा के लिए हुए युद्धों में वीरगति प्राप्त हुए सैनिकों, उनके परिवारजन एवं सभी भारतीय नागरिकों के समर्पण को सदैव याद रखेंगे एवं देश को शांति और प्रगति के पथ पर ले जाएंगे।

16. इन्हीं शब्दों के साथ, मैं 1965 के भारत–पाकिस्तान युद्ध की स्वर्ण जयंती समारोह से जुड़ने का अवसर प्रदान करने के लिए एक बार फिर आप सभी का धन्यवाद करती हूं और इस ऐतिहासिक अवसर पर आप सभी का अभिनंदन करती हूं।

जय हिन्द ।